ध्रुव यात्रा कहानी का उद्देश्य

ध्रुव यात्रा कहानी जैनेंद्र कुमार जी द्वारा रचित है. ध्रुवयात्रा सामाजिक, मनोविश्लेषणात्मक यथार्थवादी कहानी है. सार्थकता तथा सरलता इस कहानी की विशेषता है. कहानी अपने अंदर संपूर्ण भाव को समेटे हुए है. प्रारंभ से अंत तक कहानी ध्रुवयात्रा पर ही टिकी हुई है. इस कहानी का नायक रिपुदमन है तथा नायिका उर्मिला है, ध्रुवयात्रा कहानी का उद्देश्य इस प्रकार है--

प्रस्तुत ध्रुवयात्रा कहानी में कहानीकार जैनेन्द्र ने बताया है कि प्रेम एक पवित्र बन्धन है और विवाह एक सामाजिक बन्धन। प्रेम में पवित्रता होती है और विवाह में स्वार्थता। प्रेम की भावना व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करती है। उर्मिला कहती है, "हाँ, स्त्री रो रही है, प्रेमिका प्रसन्न है। स्त्री की मत सुनना, मैं भी पुरुष की नहीं सुनूँगी। दोनों जने प्रेम की सुनेंगे। प्रेम जो अपने सिवा किसी दया को, किसी कुछ को नहीं जानता।"

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि प्रेम को ही सर्वोच्च दर्शाना इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है, जिसमें कहानीकार को पूर्ण सफलता मिली है।

@Arunesh Sir